बालक की बुद्धि की अभिवृद्धि

सुनिता

व्याख्याता, मनोविज्ञान विभाग

गोपीनाथ सिंह महिला महाविद्यालय, गढ़वा (झारखण्ड)

बुद्धि–परीक्षा के परिणामों से यह सिद्ध हो चुका है कि बालक की बुद्धि उसकी उम्र के साथ बढती है, और बालक की मानसिक आयु उसके जन्म से किशोरावस्था के अन्त तक बढ़ती रहती है। जिस उम्र पर आकर बुद्धि की वृद्धि रूक जाती है। उसे ठीक–ठीक बताना अत्यन्त कठिन है। पिन्टर महोदय का मत है कि 14 से 22 वर्ष के बीच में बुद्धि का विकास किसी भी समय रुक जाता है।[1] टरमैन के विचार से उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के बालक अपनी बुद्धि के विकास के चरम बिन्दु पर 16 वर्ष की अवस्था में पहुँच जाते हैं।

बुद्धि की अभिवृद्धि के सम्बन्ध में और अच्छी तरह से समझने के लिए हम विभिन्न आयु पर कुछ विशेष योग्यताओं के पाये जाने के सम्बन्ध में वर्णन करेंगे।

1. 2 वर्ष का बालक 2 अंकों वाली संख्या को दोहरा सकता है, 270 शब्दों को समझ सकता है। एक जूते के चित्र की ओर संकेत कर सकता है।
2. 3 वर्ष का बालक 3 अंकों की संख्या को दोहरा सकता है, यह समझने लगता है कि जब उसे प्यास लगती है, उसे क्या करना है।
3. 5 वर्ष का बालक एक वर्ग की नकल कर सकता है, यह बता सकता है कि जूता किस वस्तु का बना है।
4. 10 वर्ष का बालक 6 अंकों की संख्या दोहरा सकता है, 26,000 शब्दों को समझ सकता है।
5. 14 वर्ष का बालक 38,000 शब्दों को समझ सकता है। अमूर्त विचारों वाले शब्द जैसे–ईमानदारी, दान आदि की परिभाषा दे सकता है।
6. 16 वर्ष का बालक 40,000 शब्दों को समझ सकता है, जटिल शब्द जैसे सुस्ती और काहिली में अन्तर व्यक्त कर सकता है।

बुद्धि के विकास के चरम–बिन्दु पर पहुँचने से यह तात्पर्य नहीं है कि 17 वर्ष के उपरान्त व्यक्ति में किसी भी प्रकार की बौद्धिक अभिवृद्धि नहीं हो सकती। व्यक्ति का बौद्धिक विकास 30 वर्ष या उसके परे तक निरन्तर चालू रह सकता है। किन्तु नयी–नयी समस्याओं को हल कने की योग्यता उनमें जो 16 वर्ष पर थी, वहीं अब 40 वर्ष पर भी होगी। व्यक्ति का मानसिक विकास चाहे लगातार होता रहे फिर भी उसमें नयी परिस्थितियों को हल करने, उनमें अपने को व्यवस्थित करने एवं समझने की योग्यता तो किशोर जीवन में ही पूर्ण हो जाती है। वस्तुतः बाद की बुद्धि नहीं बढ़ती, ज्ञान बढ़ता है। ज्ञान एक अर्जित शक्ति है, जो बुद्धि नहीं है। बुद्धि तो वह जन्मजात योग्यता है जिसके द्वारा व्यक्ति किसी भी समस्या

के हल करने के सम्भव साधनों को अपनी क्षमता के अनुसार जुटाता है उसे हल करता और अपने को वातावरण के अनुकूल व्यवस्थित करती है। इस प्रकार की जन्मजात बौद्धिक योग्यता कैशोर्य की परिसमाप्ति पर पूर्ण हो चुकती है, उसमें आगे वृद्धि को सम्भावना नहीं। हाँ, केवल संचित ज्ञान ही बढ़ता जाता है।[2]

जीवन में सफलता और उसका बुद्धि से सम्बन्ध – जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए बुद्धि का महत्वपूर्ण योगदान होता है। व्यक्ति की बहुत कुछ सफलता उसकी बौद्धिक शक्तियों के ऊपर ही निर्भर होती है। किन्तु यह आवश्यक नहीं कि जो व्यक्ति अधिक प्रतिभावान और मेधावी है, उसे आवश्यक रूप से जीवन में सफलता मिल ही जायेगी। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए बुद्धि के अलावा और भी दूसरी वस्तुएँ हैं जिन पर सफलता निर्भर रहती है। उनमें से दो प्रमुख तत्त्व 'प्रेरणा' और अनवरत अध्यवसाय हैं जो सफलता और असफलता, दोनों में ही बहुत महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। किन्तु अधिकतर यही देखा गया है कि यदि किसी व्यक्ति की बुद्धि–लब्धि अधिक है तो उसकी सफलता के अवसर उस व्यक्ति से बहुत अधिक होंगे जिसकी बुद्धि–लब्धि कम होगी। किन्हीं किन्हीं विशिष्ट व्यवसायों में उच्च बौद्धिक योग्यता की आवश्यकता होती है और किन्हीं किन्हीं में कम बुद्धि से ही कार्य चल जाता है। जैसे, एक वैज्ञानिक दार्शनिक अथवा प्रोफेसर के लिए उच्च बौद्धिक धरातल की आवश्यकता है, जबकि क्लर्क आदि के व्यवसाय के सामान्य योग्यता से ही कार्य चल जाता है।[3]

बुद्धि–परीक्षा के उपयोग

आधुनिक काल में बुद्धि–परीक्षा परम उपयोगी सिद्ध हुई है। प्रायः यह देखा गया है कि जीवन में सफलता और असफलता तथा नयी परिस्थितियों के समायोजन एवं नयी समस्याओं को हल करने में बुद्धि का बहुत बड़ा हाथ रहता है। यही नहीं, मानव जीवन के प्रत्येक कार्य क्षेत्र में बुद्धि की बहुत अधिक महत्ता और उपयोगिता है। चूंकि बुद्धि–परीक्षा द्वारा ही बुद्धि मापी जाती है, इसलिए उसकी भी बहुत उपयोगिता है।

1. मन्द–बुद्धि बालकों का पता लगाना बुद्धि – परीक्षा के द्वारा अध्यापक सरलतापूर्वक एक ही कक्षा में पढ़ने वालों में से मन्द–बुद्धि और प्रखर बुद्धि बालकों को छाँट सकता है। उनका बुद्धि–लब्धि के आधार पर वर्गीकरण कर, उनके समान बुद्धि–लब्धि वाले बालकों के साथ उन्हें शिक्षा देकर उनका समुचित विकास कर सकता है। बुद्धि–परीक्षा से मन्द–बुद्धि. सामान्य और प्रतिभाशाली सभी बालकों की जानकारी आसानी से हो जाती है। उनमें आपस में अन्तर किया जा सकता है। एक बालक जिसकी बुद्धि–लब्धि 70 है, मन्द–बुद्धि माना जाता है जिसे विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, उसे प्रखर मेधावी बालकों के साथ जिनकी बुद्धि–लब्धि 120 से ऊपर होती है, नहीं पढ़ाया जा सकता।

2. बालापराधियों से व्यवहार – प्रायः यह देखा गया है कि अधिकतर बालापराधी निम्न बौद्धिक धरातल के होते हैं। उच्च मानसिक स्तर के बालापराधी बहुत कम मिलते हैं। बुद्धि–परीक्षा हमें इन बालापराधियों से उपयुक्त व्यवहार करने में सहायता पहुंचाती है क्योंकि बुद्धि परीक्षा द्वारा बालापराधियों की बुद्धि–लब्धि निकाली जाती है, फिर उन बहुत–से कारणों को समझा जाता है जिनमें बालक अपराधी बन जाता है। कम बुद्धि वाले बालक को अधिक कार्य सौंप देने से वह दब्बू

बन जायगा या विद्रोही अतः इस प्रकार बुद्धि–परीक्षा बालापराधी के कारणों को खोजने में तथा उसे समुचित व्यवहार करने के योग्य बनाने में सहायता पहुँचाती है।

3. शिक्षा में उपयोग–बुद्धि – परीक्षा का सबसे अधिक उपयोग विद्यालयों में होता है। बुद्धि–परीक्षा के आधार पर बालकों का वर्गीकरण–सामान्य, मन्द और प्रतिभाशाली अथवा प्रखर के रूप में किया जाता है। शैक्षिक कार्यक्रमों की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि मन्दबुद्धि और प्रखर बुद्धि बालकों में अन्तर किया जाय, उन्हें भिन्न प्रकार की शिक्षा दी जाय। अतः अग्रलिखित कारणों से बुद्धि–परीक्षा शिक्षा के क्षेत्र में परमोपयोगी सिद्ध हुई है।

I. बुद्धि–परीक्षा हमें यह बताती है कि पाठशाला में बालक की उन्नति में कमी का कारण उसकी मानसिक योग्यता की कमी है अथवा अन्य कोई कारण है।
II. बुद्धि–परीक्षा कम बुद्धि वाले बालक को तुरन्त पहचान लेती है।
III. बुद्धि–परीक्षा उत्कृष्ट बालकों को छाँटकर बता देती है। उसकी उपयुक्त शिक्षा–दीक्षा के लिए, उसमें सम्यक् विकास के लिए उसे उचित अवसर प्रदान करने पर बल देती है।
IV. अध्यापक के आगे आने वाली समस्याओं के हल में सहायता पहुँचाती है तथा विद्यालय में बालापराधियों को पहचानने में मदद देती है।
V. बुद्धि–परीक्षा बालकों की मानसिक योग्यता का सम्यक् आकलन कर उन्हें उचित शैक्षिक मार्ग–प्रदर्शन करती है।
VI. बुद्धि–लब्धि के आधार पर किसी बालक के लिए यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि वह कालेज अथवा विश्वविद्यालय के उच्च अध्ययन के योग्य है अथवा नहीं।
VII. बुद्धि–परीक्षा अध्यापकों और विशेषज्ञों को बालकों के लिए व्यावसायिक चुनाव में बहुत मदद देती है और उचित मार्ग–प्रदर्शन करती है।

4. विशिष्ट वर्गों के अध्ययन के लिए उपयोगी बुद्धि – परीक्षा व्यक्तियों के कुछ विशिष्ट वर्गों के लिए परमोपयोगी है। यह विशिष्ट वर्गों जैसे – अन्धे, गूँगे, बहरे और जातीय समुदायों का सर्वेक्षण करती है।

5. उद्योगों में उपयोगिता – उद्योगों में अधिकारियों, कर्मचारियों और विशेषज्ञों के चुनाव में बुद्धि–परीक्षा बहुत सहायता देती है। चुनाव की अन्य विधियों जैसे साक्षात् विधि एवं उम्मीदवार के आवेदन–पत्र के जिसमें उसके पूर्व अनुभवों, शैक्षिक और सामाजिक एवं विशिष्ट योग्यताओं का लेखा–जोखा होता है। साथ ही बुद्धि–परीक्षा भी परम उपयोगी सिद्ध होती है।

आज के युग के लिए, विशेष रूप में शिक्षा के क्षेत्र में तो यह वरदान सदृश सिद्ध हुई है। किन्तु इन बुद्धि–परीक्षणों का जो वहुत प्रकार की होती हैं, बड़ी सावधानी से प्रयोग करना चाहिए तथा उनमें बहुत ही सतर्कता बरतनी चाहिए। परीक्षण किन्हीं अनुभवी और सुप्रशिक्षित एवं दक्ष व्यक्तियों द्वारा आयोजित किये जाने चाहिए। परीक्षा – घावाङ्कों को पूर्ण रूप से सही नहीं मानना चाहिए, क्योंकि बुद्धि–परीक्षा किसी भी प्रकार से पूर्ण नहीं हो सकती। उसका विषय भौतिक जड़ वस्तु न होकर चेतन और अस्थिर मन वाला बालक होता है, उसमें कुछ त्रुटि आ जाना स्वाभाविक ही है। अतः हमें उनकी

उपयोगिताओं की सीमा जान लेनी चाहिए। हम व्यक्ति की बुद्धि–परीक्षा के द्वारा प्राप्त जानकारी के अलावा उसके बारे में और बहुत अधिक जानकारी प्राप्त करनी चाहिए और तब उसी के अनुसार उसे व्यावसायिक अथवा शैक्षिक मार्ग–प्रदर्शन करने का निर्णय करना चाहिए ।[5]

संदर्भ सूची

1. Sontag Lester, Charles T. Baker, and Virginia L. Nelson: "Mental Growth and Personality Development: A Longitudinal Study", Monograph of the Society for Research in Child Development, Vol. 23, No. 2. (1958).
2. Bradway, K.P. and C.W. Thompson: "Intelligence at Adulthood: A Twenty Five-Year Follow-up", Journal of Educational Psychology 53 (1962) 1-14.
3. Gallagher, James J.: "Productive Thinging", in Martin Hoffman and Lois Hoffman (eds.), Review of Child Development Research, N.Y., Russell Sage Foundation, 1964.
4. Terman, 19121, p. 126: The ability to carry out abstract thinking".
5. Bukingham, 1921, p. 273: The ability to learn.